अंतरा-शब्दशक्ति

एहसास मेरे मन के

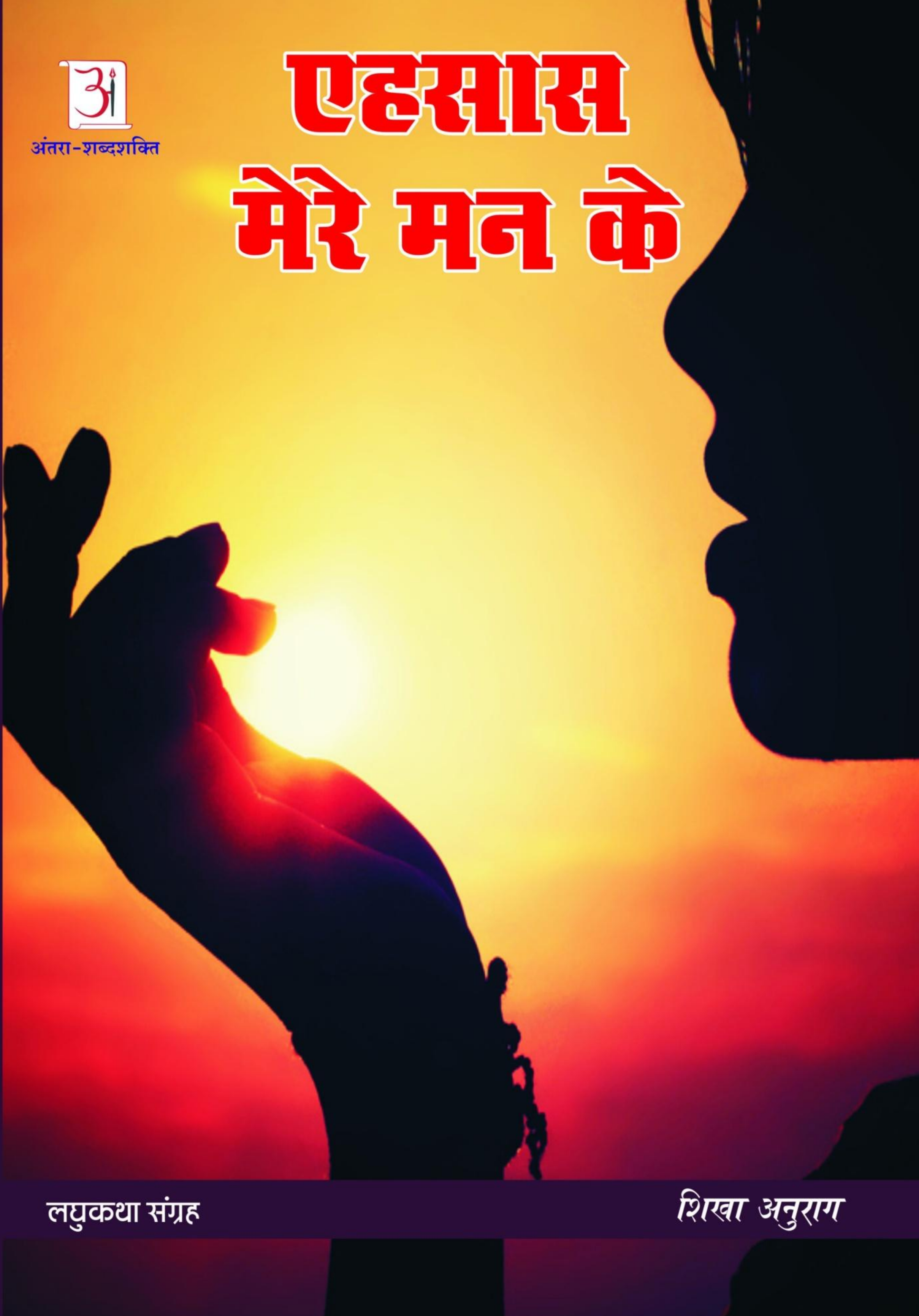

लघुकथा संग्रह

शिखा अनुराग

अहसास मेरे मन के

(लघुकथा संग्रह)

शिखा अनुराग श्रीवास्तव

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-45-2

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या) ०७६३३-२५३१५९ मो ९४२४७६५२५९

अणुडाक -antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ © शिखा अनुराग श्रीवास्तव

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण चित्र : संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

"Ahsas Mere Man ke' by 'Shikha Anurag Srivastav'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत : प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं|

भूमिका

है इसमें कुछ कहानियां

जो लिखी है मैंने

अपने मन की कलम से

है जो आईना

मानव मन के

अलग-अलग भावों का

उम्मीद है आप सब

करेंगे पसंद इसे

देंगे अपना भरपूर प्यार

आप सभी पाठकों की प्रतिक्रिया का

रहेगा मुझे बेसब्री से इंतज़ार

शिखा अनुराग श्रीवास्तव

अनुक्रमणिका

1. बेटी का घर	5
2. शांति	6
3. स्वच्छ भारत	7
4. जश्न आज़ादी का	8
5. विश्वास	9
6. वेदना माँ की	10
7. पेड़ का जीवन	11
8. बचत के पैसे	12
9. असमर्थ	13
10.वो लड़का	14
11.दर्शन	15
12.गंदे लोग	16

बेटी का घर

सारिका बहुत प्रसन्न थी आज। आखिरकार बीस सालों की कड़ी मेहनत के बाद जमा रकम से घर खरीदने का उसका सपना पूरा होने जा रहा था। वो बेचैनी से अपने पति अनंत के आने का इंतज़ार कर रही थी। अनंत के आने पर सारिका ने उसे ये खुशखबरी दी और साथ चलकर घर देखने के लिए कहा।

अनंत ने कहा- एक और घर की क्या जरूरत है? ये घर तो है ही।

सारिका ने कहा- जरूरत है अनंत, हमारी बेटी के लिए। तुम्हें क्या लगता है मैं अपनी बेटी की शादी किसी सड़क छाप से करूँगा जो उसे अलग से घर की जरूरत पड़ेगी- अनंत ने कहा।

सारिका बोली- नहीं अनंत। मैं बस ये चाहती हूँ कि इस दुनिया में एक जगह ऐसी हो जिस पर सिर्फ मेरी बेटी का हक हो। जहां से उसे कोई भी किसी भी वजह से निकाल ना सके।

अनंत ने हैरान होते हुए कहा- क्या मतलब?

सारिका बीते दिनों को याद करते हुए बोली- याद है एक बार किसी बात पर झगड़ा होने पर तुमने मुझसे कहा था- निकल जाओ मेरे घर से। रोते हुए जब मैं मायके पहुँची तो माँ-पापा, भैया-भाभी ने साफ शब्दों में कह दिया- अब तुम्हारे पति का घर ही तुम्हारा घर है। यहां तुम बस मेहमान हो। तुम थोड़ी ही देर में मुझे मनाने आ गए थे, लेकिन उसी वक्त मैंने तय कर लिया था कि मैं अपनी बेटी को इन शब्दों का सामना करने नहीं दूँगी। उसके पास मायके और ससुराल के अलावा उसका एक घर भी होगा।

अनंत सारिका की बातें सुनकर खुद पर लज्जित हो रहा था। उसने कहा- लेकिन अगर भविष्य में हमारे बेटे ने विरोध किया, जायदाद के लिए अपनी बहन को परेशान किया तो?

सारिका ने कहा- मैंने सब पता कर लिया है। चूँकि ये घर पैतृक नहीं है तो मैं इसे किसी को भी दे सकती हूँ। लेकिन फिर भी मैं एनओसी पर हमारे बेटे के दस्तखत करवा के ही अपनी बेटी को ये घर दूँगी, ताकि भविष्य में उसे किसी परेशानी का सामना ना करना पड़े।

बेटे के लिए तो तुम्हारा ये घर है ही। मुझे यकीन है इसके बाद उसे कोई आपत्ति नहीं होगी।

सारिका की सारी बातें सुनकर अनंत ने कहा- कितना सोचती हो तुम। मैं इतना सोचूँ तो पागल ही हो जाऊँ।

सारिका ने हँसते हुए कहा- सोचना पड़ता है, क्योंकि तुम्हारे पास घर है, हम औरतों की तरह मायका और ससुराल नहीं।

अनंत ने सारिका का हाथ थामते हुए कहा- मेरी गलती के लिए मुझे क्षमा कर दो सारिका।

आओ चलो हम अपनी बेटी के लिए उसका घर पसंद करने चलें।
नए घर में कदम रखते हुए सारिका की आँखों में संतुष्टि के भाव थे और अनंत की आँखों में अपनी पत्नी के लिए गर्व झलक रहा था।

शांति

बाहर गली में खेलते हुए बच्चे शोर मचा रहे थे। विनायक और अब्दुल अपने-अपने घरों से बड़बड़ाते हुए बाहर आये- दो पल की शांति नही यहां। जीना मुश्किल हो गया है।

फिर जोर से बच्चों को डाँटकर वहां से जाने के लिए कहा।
बच्चे उन्हें चिढ़ाने के लिए और शोर मचाने लगे।

तभी अचानक बम का तेज धमाका हुआ।

और उसके अगले ही पल चारों ओर शांति ही शांति पसर गयी।

स्वच्छ भारत

अजय अभी-अभी ऑफिस टूर खत्म करके अमेरिका से वापस लौटा था। उसका दोस्त रवि उसे लेने एयरपोर्ट आया था। एयरपोर्ट से बाहर निकलते ही अजय ने रवि से कहा- चल जल्दी से पान खिला। बहुत दिन हो गए।

रवि ने उसका पसंदीदा पान उसके हाथ में रख दिया। गाड़ी थोड़ा आगे बढ़ी तो कचरे के ढ़ेर की बदबू से अजय ने नाक बंद कर लिए और कहा- अमेरिका की सड़कें देखेगा तो चक्कर खाकर गिर पड़ेगा भाई। इतनी साफ़-सुथरी और एक भी गढ्ढा नहीं कहीं। और एक अपना देश है। जहां जाओ बस गंदगी।

रवि ने कहा- सिर्फ सड़कें ही देखी या और भी कुछ देखा?
बताता हूँ रुक, कहकर अजय ने शान से पान की पीक से सड़क पर चित्र खींच दिया।

सामने स्वच्छ भारत अभियान का बोर्ड अपनी नज़रों के सामने अपने मकसद की दुर्दशा देखकर लज्जित सा खुद में सिमटा जा रहा था।

जश्न आज़ादी का

सुहाना बड़ी ही प्यारी सी बच्ची थी। उसे जानवरों से बहुत प्यार था। उसने घर में कई जानवर पाल रखे थे जिनमें तोता, कुत्ता और दो सुनहरी मछलियां शामिल थी।

एक शाम सुहाना अपने बगीचे में बैठी मूंगफली खा रही थी। तभी पेड़ से उतरकर एक गिलहरी वहां आयी और सुहाना को देखने लगी। सुहाना ने उसे मूंगफली के दाने दिए तो वो कुटकुट करके खाने लगी।
ये देख सुहाना खुशी से ताली बजाने लगी।

अब ये सुहाना का रोज का खेल हो गया। वो रोज गिलहरी को मूंगफली खिलाती और गिलहरी खुश होकर उसके चारों तरफ चक्कर काटती।

एक शाम सुहाना की माँ सोनाली भी उसके साथ बगीचे में बैठी थी। सुहाना ने कहा- देखो मम्मा गिलहरी मूंगफली खाकर कितनी खुश होती है और कैसे मेरे चारों तरफ़ चक्कर काटती है।

सोनाली ने कहा- अरे वाह गिलहरी तो सुहाना की दोस्त बन गई है।

सोनाली ने फिर कहा- इसे भी तुम पिंजरे में क्यों नहीं रखती हमेशा अपने पास?

सुहाना ने कहा- मम्मा पिंजरे में रखूंगी तो ये मेरे चारों तरफ कैसे दौड़ेगी?

सोनाली ने कहा- बेटे इस गिलहरी की तरह ही बाकी जानवरों का भी मन करता होगा ना पिंजरे से निकल कर उड़ने का, घूमने का, अपने जैसे दोस्तों के साथ रहने का, जैसे तुम घूमती हो, अपने दोस्तों से मिलती हो।

सुहाना ने कहा- हाँ मम्मा ये तो मैंने सोचा ही नहीं। मैं अभी सबको खोल देती हूं।
फिर सुहाना ने तोते का पिंजरा खोल दिया, अपने कुत्ते की जंजीर भी खोल दी, और मछलियों को पास के तालाब में डाल आयी। सुहाना को उनकी याद आ रही थी लेकिन वो खुश भी थी।

उसने गिलहरी को मूंगफली खिलाते हुए कहा- तुमने मुझे बहुत अच्छा पाठ सिखाया दोस्त। तुम्हारा शुक्रिया।

थोड़ी ही देर में गिलहरी के साथ-साथ सुहाना का तोता और कुत्ता भी अपनी आवाज़ में खुशी जताते हुए उसके चारों तरफ चक्कर लगाते हुए उसके साथ खेलने आ गए।

सुहाना ताली बजाते हुए उनके साथ आज़ादी का जश्न मना रही थी।

विश्वास

निशा की बेटी के विद्यालय से नोटिस आया था। वो घबरायी हुई विद्यालय पहुँची तो पता चला, उसकी बेटी जो कि कक्षा एक कि विद्यार्थी थी, ने परीक्षा में कम अंक आने पर परिणाम-पत्र पर खुद ही अपने नंबर बढ़ा लिए थे। एक पल के लिए निशा को विश्वास नहीं हुआ। जी चाहा वहीं पर थप्पड़ लगा दे अपनी बेटी को। लेकिन अचानक उसे सालों पुरानी एक बात याद आ गई।

निशा तब कक्षा सात की विद्यार्थी थी और इतिहास विषय उसे बिल्कुल पसंद नही था। जब परीक्षा परिणाम आने पर उसे पता चला कि उसे मात्र उत्तीर्णांक मिले है तो वो घबरा गई ये सोचकर कि घर में क्या जवाब देगी। और डांट से बचने के लिए उसने अपने तैंतीस नम्बरों को खुद अठ्ठासी कर दिया। भगवान से मन्नतें मनाती हुई उसने अपनी माँ के हाथ मे परिणाम-पत्र दिया। माँ का ध्यान कुल अंक पर नहीं गया तो उसकी जान में जान आई। लेकिन विद्यालय में वापस परिणाम-पत्र जमा करने पर उसकी चोरी पकड़ी गई और उसकी माँ को विद्यालय बुलाया गया।

निशा की माँ ने सारे शिक्षकों के सामने विश्वास से कहा- ये किसी और कि शरारत है। उनकी बेटी उन्हें धोखा नहीं दे सकती और उसे बिना डाँटे, बिना कुछ कहे घर लेकर आ गयी।

उस पल निशा खुद अपनी नज़रों में गिरी जा रही थी। उसने उसी पल ठान लिया कि अब वो कभी ऐसा कुछ नहीं करेगी जिससे उसकी माँ का विश्वास टूटे। अगली परीक्षा में जब उसने अपनी मेहनत से इतिहास में अच्छे अंक प्राप्त किये तब उसकी माँ ने कहा- मैं जानती थी नंबर तुमने ही बढ़ाये थे। लेकिन मैं तुम्हे परखना चाहती थी, एक मौका देना चाहती थी। इसलिये मैंने तुम पर भरोसा जताया, तुम्हें डांटा नहीं। और देखो आज तुमने मेरे भरोसे की लाज रख ली। मुझे गर्व है तुम पर।

अब आज निशा अपनी माँ की जगह खड़ी थी। और उसने भी अपनी माँ के रास्ते पर चलते हुए अपनी बेटी पर विश्वास जताया।

अपनी बेटी की झुकी हुई आँखों को देखकर वो समझ गयी थी उसकी माँ की तरह उसका विश्वास भी जीत जाएगा।

वेदना माँ की

मैं पृथ्वी हूँ। मुझ पर रहने वाले सारे निवासी, जीव-जंतु माता कहते है मुझे। लेकिन अफसोस इस बात का है कि माता की इज्जत करना भूल चुकी है मेरी ये संतानें।

मैंने इन्हें जीवन दिया, आश्रय दिया, अनाज दिया, लेकिन मेरी ये कृतघ्न संताने अंधाधुंध प्रगति की इच्छा में दिनों-दिन अपनी माता के शरीर को खोखला करती जा रही है।

मुझे इस बात का दुख नहीं है कि दिन पर दिन खोती जा रही हूं मैं अपना जीवन, नष्ट हो रही है मेरी आयु। दुख है कि मैं ना रही तो मेरी इन संतानों का क्या होगा?

इसलिए अपने तरीके से वक्त-वक्त पर मैंने इन्हें संकेत भी दिए, कभी तूफान के रूप में, कभी भूकंप के रूप में। लेकिन इन्होंने मेरी बातों को सुनने-समझने की कोशिश ही नहीं की।

मेरे सबसे लायक बेटे- ये वृक्ष, ये जंगल, मेरी सबसे लायक बेटियां- ये नदियां, ये सब मिलकर ना सिर्फ मेरे और मेरे बाकी संतानों के स्वास्थ्य की रक्षा करते है, बल्कि सबकी भूख-प्यास मिटाकर जीवन के साधन भी उपलब्ध कराते है।

लेकिन हाय रे मेरी सबसे नालायक संतान- ये इंसान, बजाए इनकी कद्र करने के, इनकी रक्षा करने के, अपनी तरक्की के नशे में चूर इनका अस्तित्व मिटाता जा रहा है।

काश किसी तरह मेरे इन मूर्ख बालकों को समझ आये की अगर माता का ही अस्तित्व ना रहा तो संतानों का अस्तित्व तो स्वतः ही मिट जाएगा।

मेरा बस एक सवाल है सबसे। अपने माता-पिता के बूढ़े और लाचार होने पर तो रख आते हो उन्हें वृद्ध-आश्रम में, पर मुझे किस आश्रम में रखोगे जब मैं हो जाऊंगी पूरी तरह बीमार और लाचार।

पेड़ का जीवन

आशु बरसों बाद अपने गांव गया। वहां जाते ही वो सबसे पहले अपने घर के समीप लगे पेड़ के पास गया जिससे उसे बचपन से ही बहुत लगाव था। वो पेड़ अब पूरी तरह सूख चुका था और अंतिम सांसें ले रहा था। आशु उसकी ये हालत देख उससे लिपट कर रो पड़ा। ऐसा लगा जैसे वो पेड़ उससे कुछ कह रहा हो।

पेड़ ने कहा- आशु मैने तुम्हें बहुत याद किया। शायद तुम होते तो आज मैं इस हाल में नहीं होता।

आशु ने पूछा- बताओ मुझे क्या हुआ तुम्हारे साथ?

पेड़ ने उदास आवाज़ में कहा- आज अपना पूरा जीवन याद आ रहा मुझे। एक छोटा सा बीज था मैं। फिर नाजुक कोंपल हुआ, फिर हरा-भरा वृक्ष। फिर मुझ पर फल लगे। मैं ना जाने कितने पक्षियों का आश्रय बना। लोगों को छाया दी, सबको भोजन दिया।

फिर एक दिन आया जब मुझ पर फल लगने बंद हो गए और कृतघ्न इंसानों के लिए अब मैं बेकार हो गया। उन्होंने अब लकड़ियों के लिए जगह-जगह मेरे अंगों को काट दिया। सारे पक्षी मुझे अकेला छोड़ गए। धीरे-धीरे अब खत्म हो रहा है मेरा जीवन। बस सूखा ठूंठ बनकर रह गया मैं। लेकिन मुझे दुख नहीं गर्व है अपनी जीवन यात्रा पर कि अंत तक भी मैं सबके काम आया।

आशु पेड़ की बात सुन भावुक हो गया। उसने उससे सब इंसानों की तरफ से क्षमा मांगी और प्रण किया कि आज से वो ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगायेगा और उनकी देखभाल भी करेगा। साथ ही साथ लोगों को भी जागरूक करेगा इस विषय में। ताकि ये धरती सदा हरी-भरी रहे ना कि इस पेड़ की तरह सूखे ठूंठ में तब्दील हो जाये।

बचत के पैसे

आज रमा बहुत खुश थी। तीन साल से पैसे बचाते-बचाते आखिरकार आज उसके पास इतने पैसे जमा हो गए थे जिससे उसका पति सुनील अपने लिए सेकेंडहैंड स्कूटर खरीद सकता था।

सुनील का दफ्तर घर से अच्छा-खासा दूर था। उसका काफी वक्त आने-जाने में निकल जाता था और वो काफी थक भी जाता था।

रमा ने खुशी-खुशी जब सुनील के हाथों में पैसे रखे तो दोनों की आँखें भीगी थी।

शाम को रमा बेसब्री से सुनील का इंतज़ार कर रही थी। सुनील को पैदल आते देख रमा परेशान हो गयी। तभी उसने देखा सुनील के पीछे एक ठेला आकर घर के दरवाजे पर रुका। उस पर नया फर्नीचर रखा हुआ था।

रमा ने ठेले वाले से कहा- भैया आप शायद गलत पते पर आए है। तभी सुनील ने कहा- नहीं रमा ये फर्नीचर हमारा ही है। रमा हैरानी से सुनील को देख रही थी। उसे कुछ समझ में नहीं आ रहा था।

सुनील ने कहा- तुमने स्कूटर के लिए जो पैसे दिए थे, उसी से ये फर्नीचर खरीद लिया।

रमा को उदास देख सुनील ने कहा- उदास मत हो रमा। मैं बहुत आभारी हूँ तुम्हारा। तुम पैसे ना बचाती तो आज मैं ये सब नहीं खरीद पाता। मेरा क्या है, अब तो आदत हो चुकी है पैदल और बस की भीड़ में चलने की। लेकिन कल हमारी बिटिया को देखने लड़के वाले आ रहे है। अगर वो पुराना टूटा हुआ फर्नीचर देख कर वापस लौट जाते तो मैं खुद को माफ नहीं कर पाता।

रमा की नज़रों में आज सुनील का कद और भी ऊंचा हो गया था।

असमर्थ

कुसुम बड़ी प्यारी, मासूम सी लड़की थी जो अनाथालय में पली-बढ़ी थी। वो संजय से प्यार करती थी और उसके साथ सुखी जीवन के सपनों में खोई रहती थी। लेकिन संजय का इरादा तो कुछ और ही था।

उसने कुसुम से कहा- हम दूसरे शहर में जाकर शादी करेंगे। और इस तरह बहला-फुसलाकर वो कुसुम को अपने साथ ले गया।

दूसरे शहर में जाकर संजय ने कुसुम को विदेशी शेखों के हवाले कर दिया और उनसे पैसे लेकर चलता बना।

कुसुम हतप्रभ सी देखती रह गयी। उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि प्यार के नाम पर उसके साथ इतना बड़ा छल हुआ है।कोई ना था उस मजबूर अनाथ लड़की का जो उसे ढूंढकर वापस लाता। कहाँ कुसुम ने सपने सजाये थे कि अब उसके पास एक घर होगा, एक पहचान होगी। और कहां उसकी रही-सही पहचान भी उससे छीन ली गयी थी।

सालों बाद एक और मासूम मानव-तस्करों के हाथ लग गयी।

पर एक भली स्त्री ने उसे बचा लिया और उससे उसके घर का पता पूछकर उसे पहुँचाने आयी।

उधर उस लड़की का पिता बेचैन सा ना जाने कितनी मन्नतें मान रहा था अपनी बेटी की सलामती के लिए। हर आहट पर चौंककर भागा-भागा जाता कि शायद उसकी बिट्टो आ गयी हो। अपनी दुलारी बिट्टो के बिना एक-एक पल काटना मुश्किल था उसके लिये।

वो महिला जैसे ही उस लड़की को लेकर उसके घर पहुँची, उसके पिता के रूप में संजय को देखकर हतप्रभ रह गयी।

संजय उसके पैरों में पड़ गया और रोते हुए बोला-आप जो कहेंगी मैं आपको देने के लिए तैयार हूं इस अहसान के बदले।

वो महिला जोर-जोर से हँस पड़ी और फिर कहा- जिसने प्यार जैसी पवित्र भावना को बदनाम कर मुझसे मेरा सब कुछ छीन लिया वो मुझे क्या दे सकता है भला!

संजय ने ध्यान से देखा तो वो महिला कोई और नहीं कुसुम थी।अतीत की सारी बातें संजय को याद आ गयी। वो हक्का-बक्का से कुसुम को देख रहा था। कुछ कहने के लिए शब्द ही नहीं मिल रहे थे संजय को।

कुसुम उसे हैरान छोड़कर तेज कदमों से वापस जा चुकी थी।

संजय अब अपनी बेटी की नज़रों का सामना कर पाने में असमर्थ था।

वो लड़का

वो लड़का आ गया...

पूरे वृद्धाश्रम में इस छोर से उस छोर तक खबर फैल गयी। सब अपने-अपने कमरों से निकल कर उस लड़के यानी 'कार्तिक' को घेरकर बैठ गए।

कार्तिक सब से बातचीत, हँसी-मजाक करता हुआ, सबकी खैर-खबर लेने लगा।

कोई उसका चाचा था, कोई ताऊ, कोई ताई....।

वो हर इतवार नियम से यहां आता था। सारे बुजुर्गों से मिलकर उनकी जरूरतों की सूची तैयार करता और अगले इतवार तक सबको पूरा करता।
कोई नहीं जानता था वो कौन है, कहाँ से आता है और ऐसा क्यों करता है।
वृद्धाश्रम के संचालक उसके आने से बहुत प्रसन्न थे। कम फण्ड होने के कारण जिन बुजुर्गों के घर से पैसे नहीं आते थे उनकी देखभाल में उन्हें पहले जो दिक्कत होती थी वो अब नहीं रही थी।

एक दिन सबके ज़िद करने पर उन्होंने कार्तिक से हिम्मत जुटाकर पूछा- तुम कौन हो बेटा? यहाँ तुम्हारा तो कोई संबंधी नहीं जहां तक मुझे जानकारी है।
कार्तिक ने कहा- यहां सब मेरे संबंधी है। यहां आने से पहले मैं अनाथ था।
दुनिया में अकेला, बेसहारा। अनाथालय में पला-बढा, किसी तरह पढ़-लिखकर काम पर लग गया, लेकिन परिवार के सुख के बिना सब कुछ अधूरा था। अब देखिये मेरे सर पर हाथ रखने वाले कितने लोग है।

दरअसल मैं इन सबकी नहीं अपनी जरूरत पूरी करता हूँ। स्नेह और ममता की जरूरत जिसके बिना इंसान के जीवन में ना कोई रंग है, ना भाव, ना सुंदरता।

संचालक महोदय इसके बाद कुछ नहीं कह पाये। बस स्नेह और आशीर्वाद भरा हाथ कार्तिक के सर पर रख दिया।

दर्शन

बचपन से ही श्रीकृष्ण के अनेक रूपों की कथा सुनते हुए कब सुमन कृष्ण-भक्त हो गयी वो खुद नहीं जान पायी। अपने प्रभु श्रीकृष्ण से जुड़े तीर्थों पर जाना उसका एकमात्र सपना था।

शादी के बाद जब पहली बार उसके पति अमित ने पूछा- बोलो कहां घूमने चले, तो सुमन ने हिचकते हुए कहा- यहां से जगन्नाथ पुरी नजदीक है ना। वहीं चले?

अमित एक पल के लिए सोच में डूब गया कि लोग कश्मीर, शिमला, केरल की वादियों में घूमना चाहते है और उसकी पत्नी को तीर्थ जाना है, लेकिन उसने हाँ कह दिया।

सुमन की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। आज उसका एक सपना पूरा होने जा रहा था। पुरी पहुंचकर जब अमित और सुमन जगन्नाथ प्रभु के दर्शन के लिए पहुँचे तो मंदिर में काफी भीड़ थी।

अमित किसी तरह रास्ता बनाते हुए सुमन को थोड़ा आगे ले गया, लेकिन तब भी सुमन दर्शन नहीं कर पा रही थी। उसकी आँखों से आँसू छलकने ही वाले थे कि अमित ने उसे गोद में उठाकर ऊंचा कर दिया और कहा- अब आराम से दर्शन करो।

अपने प्रभु की मूरत साक्षात अपने सामने देखकर सुमन की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था।

वहां मौजूद सारे लोग इस अनूठे जोड़े को देखकर मुस्कुरा रहे थे। और सुमन मन ही मन अपने ईश्वर को धन्यवाद दे रही थी अमित जैसा जीवनसाथी देने के लिए।

गंदे लोग

मोहल्ले में नाली सफाई का कार्य चल रहा था। नगरपालिका के मजदूर गर्मी की भरी दोपहर में भी काम कर रहे थे।

नन्हा बबलू अपने घर की बालकनी से ये सब देख रहा था। अचानक उसने देखा एक मजदूर पसीने से बहुत ज्यादा बेहाल हो रहा था और शायद चक्कर खाकर गिरने वाला था। बबलू दौड़ा-दौड़ा उसके और बाकी मजदूरों के लिए पानी लेकर चला गया।

वो सबको पानी पिला ही रहा था कि उसकी माँ ने देख लिया और डांटकर उसे वापस बुलाया।

बबलू के वापस आते ही उसकी माँ सीधे उसे लेकर नहलाने गयी। उसने हैरानी से माँ से पूछा- अभी तो नहाया था। फिर से क्यों? और तुम गुस्सा क्यों हो? तुम ही तो कहती हो हमें सबकी मदद करनी चाहिए। माँ ने कहा- डांट रही हूँ क्योंकि तुम उन गंदे लोगों के पास गए। उनके पास नही जाते है, ना उन्हें छूते है।

बबलू ने हैरानी से पूछा- लेकिन ऐसा क्यों माँ? वो भी तो हमारी तरह है, फिर वो गंदे लोग कैसे हुए? उनके पास जाने या छूने से क्या होता है?

माँ ने कहा- वो गंदे लोग है, क्योंकि गंदगी में रहते है। देखा नहीं, कैसे नाली का कचरा निकाल रहे थे?

माँ को गुस्से में देख बबलू ने बड़ी ही मासूमियत से पूछा- माँ, गंदगी फैलाने वाले गंदे लोग होते है या गंदगी साफ़ करने वाले? बेटे के मासूम सवालों का माँ के पास अब कोई जवाब नहीं था।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - शिखा श्रीवास्तव

उपनाम - शिखा अनुराग

जन्म - 13 अप्रैल 1987 (हाजीपुर)

शिक्षा - स्नातक (समाज शास्त्र)

निवास - रांची

संपर्क नं. - 7979974241

ई मेल - anushishalabh@gmail.com

कार्यक्षेत्र - स्वयं का स्टार्टअप 'अनुशी कमर्शियल'

उद्देश्य - समाज में जागरुकता लाने की एक छोटी सी कोशिश करना अपनी लेखनी के जरिये।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

Women आवाज़ आधी आबादी की गूँज... www.WomenAawaz.com

अन्तरा शब्दशक्ति www.antrashabdshakti.com

978-93-88102-45-2

मूल्य 40/-

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क– ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com